3.87 P
59
H
MICRO FILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1218/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 387

18

891.431
Ar54D

Desh Bhagti ki Pukar

श्री लाजपति शहीद माला का चौथा पुष्प

देशभक्ति की पुकार

IMPERIAL RECORD
RECEIVED
15 AUG 1932
DEPARTMENT

भूतपूर्व राष्ट्रपति पं० जवाहिरलाल नेहरू

ले० व प्र०-श्री मोहनलाल 'अरमान' कानपुर।

प्रथमवार) सर्वाधिकार स्वरक्षित मूल्य)॥।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 387
Date 8.12.71
GOVT. OF INDIA

Desh bhagti ki Pukar

वन्देमातरम्

देशभक्ति की पुकार

॥ ईश बन्दना ॥

जयति सर्व शक्तिमान, विश्व उर निवासी ॥
करत दूर मोह जाल, रहत एक रस त्रिकाल ।
दीनन पर हो दयाल, हरत भक्त फासी ॥१॥
जयति सर्व शक्तिमान, विश्व उर निवासी ॥
लसत मुकट मय सुभाल, लोचन छबि निध बिशाल ।
करत छणक में निहाल, मन्द मन्द हांसी ॥२॥
जयति सर्व शक्तिमान, विश्व उर निवासी ॥
पुरषोतम नाम लेत, आवत जग दरश हेत ।
बान ग्रस्थ ग्रहस्थ रूज, पीत पत उदासी ॥३॥
जयति सर्व शक्तिमान, विश्व उर निवासी ॥
भारत संकट कराल, दीजे जगपति निकाल ।
बिनय ये ,मोहन, दयाल, अंत्तिम सुखरासी ॥४॥
जयति सर्व शक्तिमान, विश्व उर निवासी ॥

गजल

अपने हुवा जो दर्द सर ख्याले वतन है आज कल ॥
जब से बने हैं हम गुलाम, मुश्किल मुशीबतें तमाम।
पूछो न हाले दिल कोई रञ्जो महन है आजकल ।।अपने॥
ज़ुल्मो सितम के दौर ये, कब तक रहेंगे और ये।
दुशमन हमारे मुल्क का चर्खे कुहन है आजकल ।।अपने॥
कैसी अजीब दिल्लगी, काबिल रहम है जिन्दगी।
उलझन है दिलको कलनहीं कैसी जलनहैआजकल ।अपने
गैरौ स्वराज क्या मिला, मांदा समझ लो लो जरा।
'अरमां, नशीदतें वहीं चैनो अमन है आजकल ।।अपने।।

गजल

गांधी इर्विन समझौता भी क्या खूब हुआ है
लंदन में तहलका है ग़जब शोर बपा है
शेर-करते हैं मानचेस्टर वाले ये शिकायत
कैसा स्वराज बन्द न हो अपनी तिजारत
ये बायकाट माल विदेशी का बुरा है। लंदन०।
शेर-मिस्टर की औंधी खोपड़ी रीडिंग के वही ख्याल
स्पीच सुनके येहतरह है मुल्क को मलाल
क्या अक्ल का दिवाला निकल उनके गया है। लंदन०।
शेर-कोई सुर्ख आंख करके दिखाते हैं खौफ डर
करने को दमन अब भी तुले बैठे हैं अफसर
मालूम नहीं इन्किलाब होने को क्या है ॥लंदन०॥
शेर-,अरमां, लिखा है अपने मुक़द्दर में और क्या
देखेंगे गोलमेज़ का चुपचाप तमाशा
सम्राज्य वादियों के चढ़ा वोही नशा है ॥लंदन०॥

गज़ल

अभी और कितने सितमगर उठेगें ॥
जिबाः होने वाले भी हँस कर उठेगें ॥१॥
अगर इम्तहां का कोई वक्त आए।
हजारों लिये नौजवां सर उठेगें ॥२॥
मिटा ज़ुल्म ज़ालिम का दुनियां से देगें।
वो जब क़स्द कर दिल के अन्दर उठेगें ॥३॥
तमासा कयामत का होगा नजर में।
कफ़न बांधे सर जब बहादर उठेगें ॥४॥
किये कस्द बैठे हैं, अरमान, दिल में।
मिटाते हुये ज़ुल्म अक़सर उठेगें ॥५॥

गज़ल

पिलादे जाम जरा मुल्क के मयख़ाने की।
फिर जरूरत न रहे साकिया पैमाने की॥
सरूर आँखों में वो रङ्ग गुलाबी आए।
मस्त बहके जो अदां देख ले मस्ताने की॥
निशार मुल्क की खिदमत में जां अगर हो मेरी।
फिर तमन्ना न मुझे दैरो हरम जाने की॥
ज़ुल्म ज़ालिम से परेशां न मुज़तरिब थे हम।
चर्ख़ तुझको क्या पड़ी है मेरे बहकाने की॥
क़फ़स में करके मुझे यों न धमकियां दे तू।
याद करले मेरे नालों में असर आने की॥
सितम की तेग़ जफ़ा मुर्ख फाम है, अरमां,।
हविस है दिल को शहादत पे खूं बहाने की॥

गज़ल

ज़ालिमों अब ज़ुल्म ढाना छोड़ दो।
वे गुनाहों को सताना छोड़ दो॥
चन्द दिन की साहबी कैसा गरूर।
सुर्ख आंखें तुम दिखाना छोड़ दो॥
खूने नाहक़ से नही होगा भला।
जोर खञ्जर आजमाना छोड़ दो॥
ज़ार शाही का तमाशा क्या हुवा।
तुम किसी का खूं बहाना छोड़ दो॥
यक नजर डालो जमाने की तरफ।
ढग अपना जालिमाना छोड़ दो॥
जब मिलो मोहन, मुहब्बत से मिलो।
पेश बेरुख़ी से आना छोड़ दो।

संसार स्वार्थ का है साधन. बिश्वास करे किस का कोई।
जब दोस्त बन गये हैं दुशमन, बिश्वास करे किस का कोई॥
जो कल हम दर्द हमारे थे, जिनको हम दिल से प्यारे थे।
उनके है जिगर में आज जलन, बिश्वास करे किस का कोई॥
माशूक़ थे हम दिलबर जिन के, जो साथी थे इस जीवन के।
दे गये वह अब रञ्जो महन, बिश्वास करे किस का कोई॥
उलफत का लिये दिलमें हशरत, दिलको नहीं कल देखें सूरत।
वो आज शक्क है शोलाजन, बिश्वास करे किस का कोई॥
दुनियांको क्या ,अरमां, समझें, कुदरत उसको दुनियां समझें।
अशआर तुम्हारे सुन मोहन, बिश्वास करे किस का कोई॥
जब दोस्त बन गये हैं दुशमन, बिश्वास करे किस का कोई।

बहर तवील

गफ़लते ख़्वाब से नवजवानो उठो।
मुल्क आजाद अपना बनाते चलो ॥१॥
दिल में है दर्द कौमी अगर आपके।
हिन्दू मुस्लिम का झगड़ा मिटाते चलो ॥२॥
क्यों बनो, मीर जाफ़र, ओ जयचन्द तुम।
क्यों जमाने को साहब हँसाते चलो ॥३॥
बस करो दस्त बस्ता की ये अर्ज है।
यों न फ़ितने ग़जब के उठाते चलो ॥४॥
कोई इज़्ज़त गुलामों की होती भी है।
ये समझ लो ज़रा शर्म खाते चलो ॥५॥
कोई मज़हब गुलामों का होता नहीं।
ये मुनासिब है सबको सुनाते चलो ॥६॥
तर्फ़ स्वराज मंजिल के अपना कदम।
ओ जवां मर्द वीरों बढ़ाते चलो ॥७॥
हिन्द में होने वाला ही स्वराज है।
मेरे मुश्फ़िक़ ज़रा ये बताते चलो ॥८॥
विश्व में क्रांति की भावनाये लिये।
शांति के तुम उपासक कहाते चलो ॥९॥
धर्म अपना अहिंसा समझते हुवे।
खूने नाहक से सबको बचाते चलो ॥१०॥
हिन्द की शान में फर्क आने न दो।
क्यों किसीका यूं तुम खूं बहातेचलो ।११
मेरे ,अरमान, हिन्दू मुसलमान हैं।
दोस्त मोहन मुहब्बत निभाते चलो ॥१२॥

गज़ल

हाले वतन न पूछो ऐ रहरवां हमारा।
मिटने ही वाला अब है नामो निशां हमारा
राहत न ख्वाब में अब होगी नशीब मुझको।
दुशमन हैं खूं का प्यासा ये आसमां हमारा॥
कुछ और तर्फ पीछे देखें जो ग़ौर करके।
पुर सब्ज ये चमन था हिन्दुस्तां हमारा॥
पढ़ते थे इल्म आकर यां गैर मुल्क वाले।
वो दिन थे जबबना था कायल जहां हमारा॥
स्वराज वो खुशी से देंगे न हिन्द को अब।
जब तक न लेगें मोहन, कर इमतहां हमारा॥

गज़ल

साम्यवादी हिन्द अपना अब बनाना चाहिये।
आत्म बल से कर बिजय सुख शांत पाना चाहिये॥१॥
चाहिये सीने पे लेना सख्तियों के वार को।
जुल्म सहकर जुल्म की हस्ती मिटाना चाहिये॥२॥
जेल ही एक तीर्थ है अपनी तपस्या के लिये।
वक्त पर हम सब को मिलकर जेल जाना चाहिये॥३॥
मुब्तिलाये रंजो गम हम मुल्क अपने में रहें।
नवजवानो कुछ तो तुमको ख्याल लाना चाहिये॥४॥
जंगे मेदां में बढ़ो बलिदान होने के लिये।
हुक्म गांधी का तहे दिल से बजाना चाहिये॥५॥
है गुलामी में नहीं कुछ जिन्दगानी का मजा।
मुल्क को आजाद ही करके दिखाना चाहिये॥६॥
गर मजहबी झगड़ों को करदे नजर अंदाज हम।
कौमी नारे हमको अब ,अरमां, लगाना चाहिये॥७॥

ख्याल बहर लँगड़ी

न चस्म कश से देख। इन्हें ये तो हैं खाक़ दानी के मजे।
नशाब होगे. इन्हीं से तख्त सुलेमानी के मजे॥
तुम्हें न हो मंजूर रब्बअरनी के लन्तरानी के मजे।
मिलेगे हमदम, कभो गुफ्तार नागहानी के मजे॥
बहुत किए बरबाद इश्क जानां में सुलतानी के मजे।
न क्यों मिलेगें, उसे हमदम को पासबानी के मजे॥
न ऐसाघबड़ा ऐ मुज़तिरब दिल मिले जो हैरानी के मजे॥१।
वो क्या बिचारा समझ सके हज़रते हुकमरानी के मजे।
जिसने लिए हैं, हमेशा तसव्वरे जानी के मजे॥
ख्याल रूतबे का करना बलरूत में नादानी के मजे।
दिले यार में, मिले मुझको भी महमानी के मजे॥
ब गौर इन सब के ख्याल लाना है जिन्दगानी के मजे॥२।
न खुश हो अब वायदा पे ऐ मुजतर दिल आसानी के मजे
मिलेगें तुझको, अभी मुशकिल से कद्रदानी के मजे॥
चले कब्र को यास न कुछ देखे जहान फानी के मजे।
यही सितमगर, इन्हें कहते हैं जिन्दगानी के मजे॥
लिबास की परवाह किसे लेते हैं उरयानी के मजे॥३।
फला के दिल जुल्फ में जरा देखो खीचा तानी के मजे।
जीने ज़बी के, अजी नूरानी पेशानी के मजे॥
तुम भी ता लो देख नज़र से रङ्ग आफ़रानी के मजे।
इलाही मेरे, चश्म गिरियां में हैं किस पानी के मजे॥
लेते हैं ,अरमान, रहके दुनियां में मेहरबानी के मजे।
नशीब होगें, इन्हीं से तख्त सुलेमानी के मजे।४॥

ख्याल बहर शिकस्ता

उठो २ अब भी नवजवानों रहोगे खाना खराब कबतक।
गुलाम बन कर रहोगे कबतक रहेगा शौके शराब कबतक !!
नजन्दुलमैनी में खुद को भूलो, ये कोई दरजा न उन्नती का।
जबां मुबारिक से ये सुनादो, जहान में इन्तखाब कबतक ।।
उठो २ अब भी नवजवानो रहोगे खाना खराब कबतक।
तुम्हारे बच्चे हैं भूखो मरते, लगाओ साहब को डालियां तुम ।।
हजार लानत तुम्हारे ज़र पर, बने रहोगे नवाब कबतक ।।
उठो २ अब भी नवजवानो रहोगे खाना खराब कबतक।
अगर है कुछ दिल में दर्द कौमी, तो अपनी हालत की तर्फ देखो
बतावो दौलत के दर्द मन्दो, पढ़ोगे लालच का बाब कबतक।
उठो २ अब भी नवजवानो रहोगे खाना खराब कबतक ।।
वतन को आजाद है बनाना, तो निकलो मैदां में शेर बनकर।
सवाल ये कौम का है अरमां, न दोगे आखिर जवाब कबतक ।।
उठो २ अब भी नवजवानो रहोगे खाना खराब कबतक।

नोट—वर्तमान रहस्य स्वांग मण्डलियों के संचालकों से मेरा ये नम्र निवेदन है कि वो देश की दुःख जनक अवस्था को देखते हुवे अब और गन्दे दुराचार फैलाने वाले तमासों का प्रदर्शन न करें नवयुवकों में राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करने के लिये देश कालीन, लोक प्रिय, तमासों का गांव जिले तहसीलों में प्रदर्शन करके पीड़ित राष्ट्र को उठाने में सहायक बने।

पं० गिरजाशङ्कर शुक्ल द्वारा शङ्कर प्रेस, कानपुर में मुद्रित

स्व० पंजाब केशरी लाला लाजपति राय की पूर्ण स्मृती में

❀ श्री लाजपति शहीद पुस्तकालय ❀

दिल चस्प फड़कते हुये सुन्दर मनोहर गानों से परिपूर्ण

पुस्तकों का सूचीपत्र

बलिदान	,,	,,	,,	,, मूल्य	)॥।
विशाल हिन्दू संगठन		,,	,,	,,	)॥।
साम्यवाद	,,	,,	,,	,,	)॥।
शहीदे वतन	,,	,,	,,	,,	)॥।
देशभक्त की पुकार	,,	,,	,,	,,	)॥।
क्रांति का पुजारी	,,	,,	,,	,,	)॥।
सोज़े वतन	,,	,,	,,	,,	)॥।

नोट—हर जगह गाने वाले प्रचारकों की जरूरत हैं जो घूम फिर कर जनता में इन पुस्तकों का प्रचार कर सकें कमीशन के अलावा उनको और भी अर्थिक सहायता मिल सकती है पत्र व्योहार के लिए जवाबो कार्ड आना आवश्यक है,

पुस्तक मिलने का पता:—

श्री लाजपति शहीद पुस्तकालय

नौघड़ा—कानपुर।

शङ्कर प्रेस, नौघड़ा-कानपुर।